SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

श्रीराम सीड्स प्रा॰ लि॰

272, नई धान मंडी, श्रीगंगानगर - 335001(राज.)

गेहूँ की फसल उत्पादन हेतु आवश्यक सुझाव

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

किस्में

- **प्रमाणित बीज :** RAJ-1482, RAJ-3077, RAJ-3765, RAJ-4037, PBW-550, PBW-502, PBW-343, PBW-826, HD-2851, HD-2967, HD-3086, HD-3386 DBW-187, DBW-222, DBW-303, DBW-327, DBW-372, WH-711, WH-1270, WH-1402, C-306
- **रिसर्च बीज :** गंगागोल्ड, अन्नपूर्णा (SRW-308), वसुधा (SRW-1555)

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

बुवाई का समय

सिंचित क्षेत्रों में समय की बिजाई 25 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक। पछेती बिजाई दिसम्बर के तीसरे सप्ताह तक कर लेनी चाहिए तथा उसके बाद गेहूँ की बिजाई लाभदायक नहीं होती। समय की बिजाई के लिए औसत तापमान 22 डिग्री सेल्शियस सबसे अच्छा है।

बीज दर

बीज की मात्रा किस्म व बिजाई के समय पर निर्भर करती है। छोटे साईज के बीज वाली किस्मों का 40 कि.ग्रा. व मोटे बीज वाली किस्मों का 50 कि.ग्रा. बीज प्रति एकड़ प्रयोग करना चाहिए। छिड़काव विधि द्वारा बिजाई करने पर 50 कि.ग्रा. तथा पछेती बिजाई में 60 कि.ग्रा. बीज प्रति एकड़ डालें।

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

बुवाई का तरीका

बीज एवं खाद ड्रिल से करें। लाईनों के मध्य फासला 20 से.मी. रखें।
पछेती बिजाई में लाईनों के मध्य फासला 18 से.मी. रखें। धान-गेहूँ फसल चक्र में गेहूँ की जीरो टिल ड्रिल मशीन से तप्पड़ में भी बिजाई की जा सकती है। कम्बाईन से कटे धान के खेत में हैप्पी सीडर द्वारा भी बिजाई की जा सकती है।

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

सिंचाई प्रबंधन

पहली सिंचाई	बुवाई के 20–25 दिन बाद
दूसरी सिंचाई	40–45 दिन
तीसरी सिंचाई	60–65 दिन
चौथी सिंचाई	80-85 दिन
पाँचवी सिंचाई	95-100 दिन
छठी सिंचाई (ज़रूरत हो तो)	110-115 दिन

नोट : कृपया ध्यान रखें पानी की आवश्यकता हर क्षेत्र में अलग-अलग हो सकती है। अधिक या कम पानी, दोनों ही स्थिति में उत्पादन घटाता है। इसलिए फसल की सिंचाई अपने क्षेत्र की स्थिति व मौसम को ध्यान में रखकर करें।

खरपतवार नियंत्रण

गेहूँ में संकरी पत्ती वाले खरपतवारों (गुल्ली डंडा, जंगली जई आदि) की रोकथाम के लिए 500 ग्राम आईसोप्रोटूरान 75 प्रतिशत घु.पा. (ऐरीलोन, कैलरोन, टोरस) या 160 ग्राम क्लोडिनोफोप (टॉपिक/प्याँईट) 15 प्रतिशत घु.पा को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ की दर से बिजाई के 35-45 दिन बाद स्पे करें। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार जैसे बथुआ, कंडाई, प्याजी व जंगली पालक आदि की रोकथाम के लिए मैटसलफ्यूरान (एलग्रीप) 8 ग्राम/एकड़ की दर से बिजाई के 30-35 दिन बाद छिड़काव करें।

गेहूँ में मिले-जुले खरपतवारों (चौड़ी व सकरी पत्ती वाले) के नियंत्रण के लिए टोटल (सल्फोसल्फ्यूरान + मैटसल्फ्यूरान) 16 ग्राम प्रति एकड़ या वेस्टा (क्लोडिनोफोप प्रोपायर्जिल+मैटसल्फ्यूरान मिथाईल) 160 ग्राम प्रति एकड़ को 200 लीटर पानी में घोलकर बिजाई के 35-45 दिन बाद स्प्रे करें। खरपतवारनाशी के छिड़काव के लिए हमेशा फ्लैट फेन नोजल का प्रयोग करें। जहाँ 'टोटल' नामक खरपतवारनाशी का छिड़काव किया गया है उस खेत में ज्वार या मक्की की फसल न ले।

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

गेहूँ की फसल – कीट नियंत्रण

क्रमांक	कीट का नाम	लक्षण	नियंत्रण उपाय
1	**दीमक** (Termite)	जड़ें काटकर पौधों को सुखा देती है; पौधे पीले होकर गिरने लगते हैं	बुवाई के समय क्लोरोपायरीफॉस 20% EC की 2.5 लीटर दवा को 500 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर भूमि पर छिड़कें या 2.5 मिली प्रति लीटर पानी में छिड़काव करें
2	**चेपा / माहू** (Aphid)	पत्तियों के नीचे हरे कीट रस चूसते हैं; पत्तियाँ मुड़कर काली पड़ जाती हैं	इमिडाक्लोप्रिड 17.8% SL, 1 मिली प्रति 3 लीटर पानी में या थायोमेथोक्सम 25% WG, 0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी में छिड़काव करें
3	**फली खाने वाला कीट** (Armyworm / Cutworm)	बालियों और पत्तियों को काटकर खाता है; खेत में झूलसा दिखाई देता है	स्पिनोसैड 45% SC, 0.3 मिली प्रति लीटर पानी में या क्विनालफॉस 25% EC, 2 मिली प्रति लीटर पानी में छिड़काव करें
4	**थ्रिप्स** (Thrips)	पत्तियाँ सिकुड़ जाती हैं, पौधे की वृद्धि रुक जाती है	डाईमेथोएट 30% EC, 2 मिली प्रति लीटर पानी में छिड़काव करें
5	**तना छेदक / शूट बोरर**	तने के अंदर सुरंग बनाकर पौधा सूखाता है	साइपरमेथ्रिन 25% EC, 1 मिली प्रति लीटर पानी में छिड़काव करें

अतिरिक्त सुझाव

- कीट नियंत्रण के लिए छिड़काव दोपहर या शाम के समय करें।
- एक ही कीटनाशी को बार-बार प्रयोग न करें; बारी-बारी से दवाओं का उपयोग करें।
- कीटों की प्रारंभिक अवस्था में नियंत्रण सबसे प्रभावी रहता है।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन (प्रति एकड़)

क्रमांक	उर्वरक का नाम	मात्रा (किलोग्राम / एकड़)	प्रयोग का समय	प्रयोग की विधि
1	**डीएपी** (Diammonium Phosphate)	50 किग्रा/एकड़	बुवाई के समय	अंतिम जुताई में मिट्टी के साथ मिलाएँ या बुवाई के साथ सीड ड्रिल से डालें
2	**यूरिया** (Urea)	100 किग्रा/एकड़	आधा पहली सिंचाई पर व आधा दूसरा सिंचाई पर	मिट्टी में मिलाएँ या पानी के साथ टॉप ड्रेसिंग करें
3	**एमओपी** (Muriate of Potash)	20 किग्रा/एकड़	बुवाई के समय	डीएपी के साथ मिलाकर दें
4	**गोबर की सड़ी खाद** (FYM)	4–5 टन/एकड़	बुवाई से पहले	भूमि तैयार करते समय मिलाएँ

SHRIRAM SEEDS PRIVATE LIMITED

गेहूँ फसल – रोग नियंत्रण सारणी

क्रमांक	रोग का नाम	लक्षण	नियंत्रण उपाय
1	**पत्ती झुलसा (Leaf Blight)**	पत्तियों पर भूरे या गहरे धब्बे बनते हैं, बाद में पत्तियाँ सूख जाती हैं	मैनकोज़ेब 75% WP, 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें (10–12 दिन के अंतर पर 2 बार)
2	**रतुआ रोग (Rust – पीला/काला/भूरा)**	पत्तियों पर पीले या काले धब्बे व रेखाएँ दिखाई देती हैं	प्रोपिकोनाज़ोल 25% EC, 1 मिली प्रति लीटर पानी या टेबुकोनाज़ोल 1 मिली प्रति लीटर पानी में छिड़काव करें
3	**करनाल बंट (Karnal Bunt)**	बालियों में दाने काले और बदबूदार हो जाते हैं	बुवाई से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्राम प्रति किग्रा बीज से उपचारित करें; रोग-प्रतिरोधी किस्में (PBW-343, HD-2967) लगाएँ
4	**पाउडरी मिल्ड्यू (Powdery Mildew)**	पत्तियों पर सफेद पाउडर जैसी परत; दाने छोटे रह जाते हैं	सल्फर 80% WP, 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में छिड़काव करें
5	**फुट रॉट / जड़ गलन (Root Rot)**	पौधे नीचे से गलने लगते हैं, सूखने लगते हैं	ट्राइकोडर्मा विरिडी 5 ग्राम प्रति किग्रा बीज से उपचार करें या मैनकोज़ेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी छिड़कें

अतिरिक्त सुझाव

1. हमेशा स्वस्थ एवं रोगमुक्त बीज का प्रयोग करें।
2. बुवाई से पहले बीज उपचार अनिवार्य करें।
3. खेत में उचित जल निकास व्यवस्था रखें – जलभराव रोगों को बढ़ाता है।
4. रोग दिखते ही प्रारंभिक अवस्था में ही छिड़काव करें।
5. एक ही दवा का बार-बार प्रयोग न करें – दवा बदलते रहें।

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

कटाई

जब बालियाँ पूरी तरह पक जाएँ और दाने सख्त हो जाएँ, तब फसल की कटाई करें। आजकल कंबाइन हार्वेस्टर से कटाई करने पर समय और लागत दोनों की बचत होती है।

SHRIRAM SEEDS
PRIVATE LIMITED

टिप्पणी

इस पत्रक में दी गई फसल उत्पादन संबंधी सिफारिशें कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों, कृषि विशेषज्ञों, प्रगतिशील किसानों एवं सरकारी कृषि विशेषज्ञों के शोध एवं अनुभवों पर आधारित हैं। फसल अथवा किस्म का उत्पादन केवल बीज पर निर्भर नहीं करता, बल्कि भूमि की स्थिति, खाद-उर्वरक, सिंचाई, मौसम एवं अन्य कृषि कारकों पर भी निर्भर करता है। विभिन्न प्रदेशों एवं क्षेत्रों में परिणाम भिन्न हो सकते हैं। अतः कृषक स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार संबंधित कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों अथवा कृषि विशेषज्ञों की सलाह एवं स्वयं के अनुभव के आधार पर ही खेती संबंधी निर्णय लें।